**ओ३म्**

**‘ईश्वर का मिलना मुश्किल नहीं है’**

**प्रस्तुतकर्ताः मनमोहन कुमार आर्य**

कुंवर सुखलाल आर्यमुसाफिर (1890-1981) आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध गीतकार एवं भजनोपदेशकों में से एक प्रमुख भजनोपदेशक थे। आपने अपने जीवनकाल में देश भर में भजन व उपदेशों के द्वारा वैदिक धर्म वा आर्यसमाज का प्रभावशाली प्रचार किया। आपकी यह विशेषता थी कि जिस मंच पर आप उपस्थित होते थे वहां श्रोता अन्य किसी विद्वान उपदेशक से व्याख्यान सुनना ही नहीं चाहते थे। आपने बहुत प्रभावशाली गीतों व भजनों की रचना की है। यह प्रसन्नता की बात है कि अभी कुछ समय पूर्व उनके एक भक्त और दानवीर ठाकुर विक्रम सिंह जी ने **‘सिंह गर्जना’** नाम से कुवंर सुखलाल जी के ऐतिहासिक भाषणों एवं क्रान्तिकारी गीतों का संकलन प्रकाशित किया है। आज हम यहां उपर्युक्त शीर्षक का उनका एक प्रसिद्ध गीत प्रस्तुत कर रहें हैं। सन् 1979 की बात है कि हमने अपने कार्यालय भारतीय पेट्रोलयम संस्थान, देहरादून में अपने मित्रों के सहयोग से आर्य संन्यासी स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती जी, पूर्व सांसद का एक प्रवचन आयोजित किया था। इस अवसर पर मुरादाबाद के एक भजनोपदेशक भी हमें इस कार्यक्रम में गीत प्रस्तुत करने के लिए उपलब्ध हो गये थे। उन्होंने कुंवर सुखलाल जी का यही प्रसिद्ध गीत प्रस्तुत किया था। इस गीत को भजनोपदेशक महोदय ने बहुत ही प्रभावशाली अन्दाज में प्रस्तुत किया था जिसकी स्मृति यदा-कदा उपस्थित होती रहती है। उनका यह प्रसिद्ध गीत प्रस्तुत है।

अगर पाप में आपका दिल जो नहीं है।

तो ईश्वर का मिलना भी मुश्किल नहीं है।।

न हो उसकी मखलूक से प्यार जिसको।

वो आदमी कहाने के काबिल नहीं है।।

तुझे दुनियां काबू में कर लेगी नादां।

जो काबू में तेरे अपना दिल ही नहीं है।।

ये हस्ती है किसकी तू रहता है जिसमें।

अगर उसकी हस्ती का कायल नहीं है।।

जिसे दुनियां कहते हैं अय दुनियां वालों।

ये रणक्षेत्र है कोई महफिल नहीं है।।

जिसे मरना आता नहीं राहे हक में।

वो नामर्द हैं, मर्दे काबिल नहीं है।।

हथेली पे हो जिसका सर इसमें कूदे।

ये किस्ती है वो जिसका साहिल नहीं है।

‘मुसाफिर’ है तू हार हरगिज न हिम्मत।

जरा और चल दूर मंजिल नहीं है।।

आज ही हमनें यह लेख लिखा जिस पर हमें कुछ प्रतिक्रियायें भी प्राप्त हुईं हैं। पहली प्रतिक्रिया श्री ईश्वरदयालु आर्य, देहरादून की है। उन्होने लिखा है कि ‘‘**कुँवर सुखलाल** **‘आर्य मुसाफिर’** जी अपने ढंग के निराले ही भजनोपदेशक थे। मुझे उनसे मिलने और बातें करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। हमने उनको आर्य समाज देवबन्द, निकट सहारनपुर के उत्सव में आमंत्रित कर रखा था। वर्ष 1961 या 1962 की बात है, मै वहां पर मन्त्री था। श्रद्धेय पं. शिवकुमार शास्त्री जी (जो संसद सदस्य भी रहे हैं) श्रोताओं के प्रश्नों के समाधान प्रस्तुत कर रहे थे। अरबी मदरसा देवबन्द के एक वरिष्ठ छात्र ने प्रश्न किया कि आपका यह वैदिक धर्म तो बहुत पुराना हो चुका है, इसलिए क्यों न नए मजहब इस्लाम को अपनाया जाए? शास्त्री जी, अपनी विद्वतापूर्ण तार्किक शैली मे उस का समुचित उत्तर दे रहे थे, किन्तु ऐसा लग रहा था कि सर्व सामान्य जन को सम्भवतः उन का उत्तर बोझिल लग रहा था। मै और आर्यसमाज के प्रधान जी आदि इस बात को भांप रहे थे। शास्त्री जी के बाद कुँवर सुखलाल जी के ही भजन होने थे। मंच पर बैठे हुए वह भी पूरा दृश्य देख और समझ रहे थे. वह अनायास ही खड़े हुए और सम्भवतः ऊंची मेज पर रखे पानी के गिलास की ओर संकेत कर के बोले, शास्त्री जी, आप थोड़ा पानी पी लो, बहुत देर से बोल रहे हो और कुवंर सुखलाल आर्यमुसाफिर लगभग दहाड़ कर बोले, हाँ भाई! तुम ही लोग कह रहे हो न कि पुरानी वस्तुओं को बदलने के लिए। तो लो भाई आओ आगे, मैं भी तुम्हारी मदद करता हूँ। चलो पहले तो इस धरती को बदलते हैं। यह तो धर्म से भी पुरानी है। बतलाओ, कहाँ खड़े हांेगे, इसके बदलते तक। वह चैथा या सातवां आसमान भी तो पुराने ही हैं। तुम्हें तो वहां भी जगह नहीं मिलेगी। अरे, कोई तो कुछ बोलो। और तीन चार मिनट के अन्दर ही वह सभी छात्र सभा-स्थल से खिसक गए। फिर भजन भी उन्होंने इसी विषय को ध्यान मे रख कर बड़ा सटीक सुनाया था। मुझे खेद है कि उस भजन के बोल अब ध्यान नहीं रहे हैं।”

 लेख पर दूसरी प्रतिक्रिया श्री मधुप नारायण शुक्ला, इलाहाबाद की प्राप्त हुई है। उन्होंने लिखा है कि ‘‘कहा जाता है कि कुवँर सुखलाल आर्य मुसाफिर वाणी के जादूगर थे। एक मिनट में वो हंसा देते थे और एक मिनट में रुला देते थे। एक बार लाहौर में आर्यसमाज का कार्यक्रम चल रहा था। 1947 के पहले की बात है और आर्य समाज के ठीक सामने कांग्रेस का प्रांतीय अधिवेशन भी चल रहा था। उस अधिवेशन में पंडित मदन मोहन मालवीय जी मुख्य अतिथि थे। दोपहर की सभा आर्यसमाज की चल रही थी और मुसाफिर जी का बाजा मंच पर आ चुका था और सुखलाल जी भी मंच पर पहुँच चुके थे। उसके बाद कुंवर सुखलाल ने एक भजन गाकर हारमोनियम पर राग छेड़ दिया और वो गीत क्या था। **‘‘वो मुर्दा है जो स्वाभिमानी नहीं है, जिस इंसा की आँखों में पानी नहीं है।”** उसके बाद मालवीय जी कांग्रेस का कार्यक्रम छोड़ कर चले आये और चार घण्टे बैठकर मुसाफिर जी के गीत सुने। ऐसे थे कुंवर सुखलाल आर्यमुसाफिर। यह संस्मरण मेरे पूज्य पिता जी के हैं।” इस पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए श्री ईश्वर दयालु जी ने लिखा है **‘बहुत सुन्दर, मधुप नारायण जी.जब गर्दन ऊँची करके कुंवर सुखलाल आर्यमुसाफिर आलाप लेते थे, समाँ बँध जाता था. न जाने तार-मधुर स्वर कहाँ से आता था। जिन्हे पक्के राग कहा जाता है, उन के वह सिद्ध-हस्त गायक थे।’** श्री चेतन प्रकाश, जोधपुर ने अपनी प्रतिक्रया में लेख को पुनीत कार्य कहते हुए अति सुन्दर लिखा है। श्री गुरुदत्त शर्मा, मुरैना आदि 50 से अधिक लोगों ने इस लेख को पसन्द किया है।

हम आशा करते हैं कि पाठक इस भजन के शब्दों व उसके अर्थों में जो सन्देश हैं उसे समझ कर इसका भरपूर आनन्द लेंगे।

-मनमोहन कुमार आर्य

पताः 196 चुक्खूवाला-2

देहरादून-248001/फोनः09412985121